पूछ रहे हैं, यहाँ बैठे हो सुबह से, सवेल से, बाबा के आने के पहले। स्टूडेण्ट्स हो ज़रूर। तो ये ज़रूर यहाँ बैठे–2 यही तो ख्याल करते होंगे कि हमको शिवबाबा पढ़ाते आते हैं और हम सूर्यवंशी व चंद्रवंशी ये श्री लक्ष्मी और नारायण (...); क्योंकि राजयोग है ना बच्चे। तो ये यहाँ बैठ करके, दिल में इनके यही समाय रहता है कि हम राजयोग सीख रहे हैं और विष्णुपुरी या स्वर्ग के मालिक बनने के लिए। तो ख्याल में यहाँ बैठे रहते हो या कोई जमींदारी, किसको नौकरी ..... बाल–बच्चे याद आते हैं? याद तो वो आना चाहिए ना। स्कूल में जब तलक बैठे हो तो ये ज़रूर समझना चाहिए कि हम स्कूल में बैठे हुए हैं। ये पाठशाला है और ये पाठशाला है..किसकी? जिसको(इसको) कहा ही जाता है–गीता की पाठशाला। यानी ये ज्ञान जो है, जो गीता में मनुष्यों ने लगाय दिया है, वो भगवान हमको बैठ करके पढ़ाते हैं और हम भविष्य में सूर्यवंशी श्री लक्ष्मी वा श्री नारायण वा उनके कुटुम्ब के भांती बनने वाले हैं। ऐसे तो समझेंगे ना ज़रूर, कम–से–कम ऐसे तो बैठ करके या समझते होंगे ना कि हम सूर्यवंशी श्री लक्ष्मी और नारायण के परिवार के बनेंगे; क्योंकि है ही राजयोग। तो ये तो बच्चों के बुद्धि में होना चाहिए ना, बुड्ढियों के भी बुद्धि में, तो जवानों के भी बुद्धि में, तो सबके बुद्धि में; क्योंकि यहाँ बैठे किसलिए हैं? यहाँ आए ही हैं कि वहाँ तो बच्चों से सुनते हैं वही ज्ञान, यहाँ बाप से डायरैक्ट सुनते हैं। कि हम बाबा से डायरैक्ट सुन करके ..... ये जो ल०ना० का चित्र है, उस घराने के दूसरे जन्म में हम भांती बनेंगे और हमारा राज्य होगा। जैसे अभी ये जो कौरव–कांग्रेस हैं, ये पतित दुनिया, ये भी तो ऐसे ही समझते हैं कि भारत हमारा देश है, भारत हमारा राज्य है। तो अभी तो दूसरे सभी भारतवासी ये जानते हैं, उनको तो कुछ पता नहीं है। वो तो यही समझते हैं कि हम यहाँ हैं। वो नर्क और स्वर्ग की बात को नहीं जानते हैं कुछ भी। ये नर्क किसको कहा जाता है, स्वर्ग किसको कहा जाता है। वो जो दूसरे मनुष्य हैं, मनुष्य मात्र, तुम्हारे मित्र–संबंधी, काका,मामा,चाचा, गुरु–गोसाईं, उनको ये मालूम नहीं है कुछ भी, सिवाय तुम, जो अपन को ब्राह्मण कहलाते हो। वो समझते हो कि हम अभी बाप से ये स्वराज्य विद्या (...), किसके लिए? स्वर्ग के लिए। राजविद्या पाए हम फिर सूर्यवंशी घराने के, सतयुग के वा स्वर्ग के मालिक बनने वाले हैं। ये बैठ करके यहाँ सिमरण करते हो। ये याद में बैठे हो स्कूल में, जैसे कि अज्ञान काल में कोई भी बड़े स्कूल वाले, मैं बैरिस्टर बनने वाला हूँ, तो घर में ..... मैं स्टूडेंट हूँ, पढ़ाई पढ़ रहा हूँ बैरिस्टर बनने की या वकील बनने की या कुछ भी बनने की। घर में भी यही ख्याल रहते हैं स्टूडेंट्स को। ठीक है ना बच्चे! वैसे तुमको भी रहता है या स्टडी भूल जाती है, फिर सब धंधाधोरी सिर्फ याद रहते हैं? क्योंकि पढ़ते तो हो ना। स्टूडेंट्स तो हो ना। सो भी स्टूडेंट्स किसको हो? बहुत ऊँचे के ऊँचे। ऊँचे–ते–ऊँचा भगवत। वो तुमको ऊँचे–ते–ऊँचा देवता बनाने के लिए माना पढ़ा रहे हैं वा अपने पास मुक्ति देने के लिए पढ़ा रहे हैं। वो बाप मुक्तिधाम में रहता है ना। निर्वाणधाम कहो या वानप्रस्थ कहो या परमधाम कहो। तो रहते तो वहाँ है ना। बाप वहाँ रहते हैं ना। तुम उनके बच्चे हो और बच्चों को पढ़ा रहे हैं यानी आत्माओं को पढ़ा रहे हैं। अभी आत्मा इन शरीर द्वारा..अपने पढ़ाई को, मर्तबे को याद करती है या आत्माएँ शरीर द्वारा अपने शरीर के संबंधियों को याद करते रहते हैं या जिस्मानी मिल्कियत को यहाँ बैठ करके याद करते हैं या धंधेधोरी को बैठ करके याद करते हैं; क्योंकि यहाँ जब आकर बैठते हो, तो ये तो समझना चाहिए ना कि हम अभी यहाँ, बेहद के बाप आते हैं पढ़ाने, हमको बेहद का मालिक बनाने। बेहद कहा जाता है–सारी सृष्टि का, सारे विश्व का मालिक बनाने। पीछे चाहे राजा–रानी बनते हो, चाहे प्रजा बनते हो; पर मालिक तो बनते हो ना। भला ये तो याद रहेगा ना कि हम अभी स्वर्ग का मालिक बनने के लिए

यहाँ पढ़ाई पढ़ने के लिए आए हैं। उसमें भी ये तो ज़रूर ख्याल करेंगे कि स्वर्ग में पहले–2 होते हैं सूर्यवंशी। तो ख्याल में भी तो सूर्यवंशी, नई दुनिया में तो सूर्यवंशी हैं ना। तो ये तो समझते होंगे कि हम नई दुनिया में, सूर्यवंशी घराने में फिर अपनी राजाई करेंगे। ये तो बुद्धि में रहना चाहिए ना। बाबा सिर्फ सावधान करते हैं। ऐसे नहीं कि यहाँ सुबह को बैठ करके और कोई बाहर के बातें याद आवें या कहाँ यहाँ–वहाँ चले जावें। नहीं, यहाँ तो बैठ करके (...), ये तो ध्यान में रहता है या ये भी भूल जाते हो या बाबा के सामने भी भूल जाते हो? ये तो बाबा जानते हैं कि जब घरघाट में रहते हो, धंधेधोरी में रहते हो, खेती में रहते हो, कोई कन्ट्रैक्टर है, कोई सुपरवाइज़र है, कोई फलाना है, अनेक प्रकार हैं ना, तो इस समय में यहाँ आ करके ये तो जानते हो कि हम दूसरा कोर्स उठा रहे हैं। समझा ना! तो यहाँ बैठ करके उस कोर्स को याद करते हो यानी उस नॉलेज को याद करते हो, ...वहाँ का याद आते हैं। तो बाबा कहते हैं कि यहाँ जब बैठे हो, कम–से–कम, यहाँ जब बैठते हो, आते हो यहाँ, तो बाहर का धंधा–धोरी वो सभी वहाँ छोड़कर आना चाहिए। समझे, वो यहाँ याद नहीं आना चाहिए; क्योंकि वो यहाँ है ही नहीं। तुम हो ही नहीं। उस दुनिया में नहीं हो, तुम संगम के दुनिया में हो। न कलहयुग में हो। देखो, कलहयुग को छोड़ करके तुम संगमयुग में आए हो। वहाँ कलहयुग है। ये जो जगह है खास, जहाँ आते हो बाबा के पास, ये संगमयुग है। यहाँ संगमयुग पर बैठे हो। यहाँ कलहयुग में नहीं, फिर कलहयुग को छोड़ करके आए हो। उस गोरखधंधे को छोड़ करके यहाँ आए हो। इसीलिए ये मधुबन–3 जो कहा जाता है, इसलिए कि यहाँ जब आते हो, तब जो कुछ भी आपस में वातावरण, बातचीत वगैरह करो, सो यहाँ की नॉलेज की। जब तलक यहाँ हो। वो जो अपना धंधा–धोरी है, वो उनकी वातावरण, राय वगैरह उसमें आपस में बैठ करके आखानियाँ नहीं सुनानी हैं। ...यहाँ बैठ करके जो कुछ सुनते हो; क्योंकि सभी तो ज्ञान उठा रहे हो ना। सभी जैसे गइयाँ हो, ज्ञान उठाते हो। तो फिर इसका ही वर्णन होना चाहिए आपस में, इसका ही विचार–सागर–मंथन होना चाहिए। फिर वो नहीं, ये ज्ञान। ये है ज्ञान, वो है अज्ञान। वो वाचा नहीं आपस में जास्ती करनी चाहिए। नहीं, यहाँ जो भी टाइम मिले सो यहाँ आ करके, नहीं तो यहाँ आ करके बैठो, यहाँ आ करके देखो, देखने से ही, सिर्फ देखते रहेंगे ना, पढ़ते रहेंगे तो भी ज्ञान आएगा। हिन्दी तो सभी जानते होंगे अक्सर करके। कई बिचारी होती हैं, माताएँ नहीं जानती होंगी। उनको भी फिर ये ब्राह्मणी का काम है, इन ब्राह्मणियों पर बहुत रिस्पांसिबिलिटी है, इनको बैठ करके यहाँ बहलाना, समझाना–करना। ये..कोई मासी का घर नहीं ब्राह्मणी बनना। नहीं बच्ची, ब्राह्मणी को तो बहुत ओना रहना होता है। जैसे टीचर को बहुत ओना रहता है कि अगर हमारे स्कूल से पास कम हो गया, तो मेरी इज़्जत जाएगी गवर्मेण्ट में। वो बोलेंगे– क्या ये शायद पढ़ाते नहीं हैं। फलाने के स्कूल से इतने थोड़े पास हुए हैं। जो जिसका बहुत पास होंगे, वो बोलेंगे वो टीचर बहुत अच्छा है। तो बाबा टीचरों के ऊपर भी रखता है ना। तो टीचर भी तो आजकल अलग ... हो जाते हैं। अवस्था इतनी ऊँची तो नहीं है। कि सब नम्बरवार हैं। तो उनको भी सावधानी, जैसे बाप बैठ करके सावधानी देते हैं, तो जब यहाँ आते हो खास। वहाँ .... तो बाबा समझ सकते हैं, सारा दिन गोरखधंधा है। ये जब वहाँ (...); क्योंकि सारा दिन गोरखधंधा कर–करके, वो फिर आ करके बैठेंगे तो वो याद आएँगे। यहाँ तो दूर आ गए एकदम। वो तो छोड़ दिया। यहाँ आए हो संगमयुग पर, सागर के बीच। वहाँ उस किनारे में हो। जहाँ जभी घर में रहते हो तो उस किनारे में हो। यहाँ आते हो तो बीच में। यहाँ बच्चे संगम है ना। वो कलहयुग है, ये संगमयुग है यहाँ। भले जहाँ तुम ब्राह्मणियाँ बैठ करके समझाते हो, गामरों में, वो भी कलहयुग है, कोई संगमयुग नहीं है। ये संगमयुग है। इसलिए मधुबन (...)। तो यहाँ जब आते हो, यहाँ

तो तुम देखते हो, हमारा बाबा, तो बाबा याद आते हैं। समझा ना! वहाँ तो वो ब्राह्मणी करके याद करती है, शिव भी मुश्किल किसको याद आना होता है। यहाँ तो बिल्कुल सन्मुख आए हो; क्योंकि यहाँ आने की भी कोई होगी, राज़ तो होगा ना बच्ची। ये प्रभाव है यहाँ आने का, बाप के पास आने का। ऐसे नहीं कि यहाँ भी आ करके घरघाट और बाल–बच्चा, फिर हमको क्या करना है, वो क्या करना है, ये–वो करना है, ये जाएँगे, ये करेंगे, फलाना करेंगे। वो अगर याद करते होंगे ना, तो यहाँ कुछ उठाते ही नहीं हैं। वो बाबा कहेंगे, वो बिचारा जा करके साधारण प्रजा (...)। यहाँ आए हैं सूर्यवंशी घराने में, राजाई घराने में अपना पद पाने के लिए। अगर अच्छी तरह से यहाँ बैठ करके करते होंगे तो। तो बाबा समझता होगा कि नहीं, ये सूर्य घराने के आए हैं, इनको यही याद। जैसे बाबा कहते हैं ना यहाँ, देखो बाबा ये चित्र देख करके (...)। तो चित्र मदद करते हैं ना। चित्र क्यों रखते हैं घर में? कृष्ण का, फलाने का, टीरे का क्यों रखते हैं? जो अपने अष्ट देवताओं का होते हैं या मंदिर में। मंदिर भी रखते हैं घर में। जिसका–2 जो अष्ट देवता होता है, वो गुरु होते हैं ना, उनका भी फोटो रखते हैं कि हम गुरु को देखें, याद करें। ठीक है! अभी उनमें से तो कुछ मिलने का है नहीं। कुछ भी नहीं मिलने का है, धूर भी नहीं मिलने का है, छाई भी नहीं मिलने (का)। ये तो तुम समझ कर आए हो कि भक्तिमार्ग में कुछ भी चित्र तुम रखते हो घर में या जाते हो चित्रों के पास या जो कुछ भी करते रहते हो, सीढ़ी नीचे उतरते आते हो यानी घाटा पड़ता आता है। अभी है संगमयुग। बाबा आया है फायदा देने के लिए। तो फिर बाबा कहते हैं, फायदा लेने का है ना बच्ची। एक को याद करना है। भले तुम फिर घर में भी शिव को रखो, जो घड़ी–2 उनको देखने की टेव पड़ जावे, शिवबाबा, अच्छा उनसे (...)। अच्छा, ऐसे नहीं शिवबाबा को याद कर सकते हो रात को बिगर चित्र के, तो चलो घर में तो शिव का चित्र रख सकते हो ना। उनसे तो बात कर सकते हो ना। और तो कभी भी आगे शिव के चित्र से या कोई भी चित्र से, कुछ भी कुछ मिलना तो नहीं था ना। अभी तो शिव..बाप से तुमको वर्सा मिलता है। तो फिर बाप का चित्र रहना चाहिए; क्योंकि वो चित्र (...)। बाप कहते हैं कि मेरे को याद करो। तो फिर क्या करना चाहिए? आगे तो गुरु को याद, कृष्ण को याद, हनुमान को याद, फलाने को याद। ऐसे था ना बच्चे। अभी तो शिवबाबा खुद कहते हैं सन्मुख कि मुझे याद करो। अभी धंधेधोरी में रहते हैं। क्या उपाय करें! तो बाबा ने समझाया है कि भला अच्छा, घड़ी–2 शिवबाबा को याद कैसे करें! अच्छा, शिवबाबा का चित्र। ये त्रिमूर्ति का ही चित्र ठीक रहेगा कि शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा ये विष्णु बनाते हैं, सूर्यवंशी बनाते हैं या शिव का ही रखो। भला घड़ी–2 चित्र खीसे/पॉकेट में तो रख दो ना। ये तो चित्र तो है ना। तुम लोगों को मिलता तो है ना। देखो, वो चित्र है ना। कहाँ से छोटा ही चित्र काट करके पॉकेट में रख दो। तो घड़ी–2 देखो उनको, घड़ी–2 देखो तो याद पड़े। धंधे में भी रहते हो। धंधा वो पूरा हो। बाबा (ने) समझाया था ना, बाबा जब भगत था, तो लक्ष्मी–नारायण के चित्र थे, वो उसका फोटो निकाल करके पॉकेट में, बिस्तर के नीचे, दुकान में, गड्डी के नीचे, कैश के नीचे ...। जहाँ भी जाऊँ तहाँ वो ज़रूर निकालूँ और देखूँ– ऐसी आदत। तो आदत पड़ जाती है ना। तो उनको याद (...)। अभी उनसे तो कुछ मिलता नहीं था। अभी तो मालूम है, मिलना है शिवबाबा से। तो कैसे हम शिवबाबा को ही याद करें? बच्चे कहते रहते हैं कि हम भूल जाते हैं। बाबा भी कहते हैं– भूलते ज़रूर हो; क्योंकि माया तुमको भुलाएगी, ज़रूर भुलाएगी। यही लड़ाई है। ऐसे नहीं, तुम जो ज्ञान लेते हो, सो कोई तुम भूल जाते हो। नहीं–2, ज्ञान में तो बड़ी तीखी जाती है, बिल्कुल ही। देखो, ऐसी–2 बच्ची ढेर हैं जो सेन्टर सम्भालती हैं। ये बाबा जानते हैं कि सेन्टर तो सम्भालती हैं; परन्तु योग में इतना नहीं रह सकती हैं; क्योंकि योग में ही माया का झगड़ा होते हैं। कोई तुम्हारी पढ़ाई में माया

का झगड़ा नहीं। पढ़ाई तो, किसकी डल बुद्धि होती है, तो फिर वो बिचारा पढ़ नहीं सकते हैं। बाकी पढ़ाई में कोई माया नहीं इंटरफियर करती है। माया इंटरफियर करती है याद में। ऐसे कभी भी कोई मुझे नहीं आकर कहते हैं कि बाबा, हम बाबा को भूल जाता हूँ। ऐसे नहीं कहते– बाबा, हम 84 जन्म का चक्कर भूल जाता हूँ। 84 जन्म का चक्कर तो कोई मूर्ख भी नहीं भूलेंगे। 84 चक्र का चक्कर ये तो बिल्कुल ही, यहाँ सत,त्रेता,द्वापर,कलहयुग, इतना सतयुग में, त्रेता में, द्वापर में, कलहयुग में। अब ये क्या भूलने की बात है! इसमें भूलने की तो दरकार है नहीं....। तभी बाबा कहते हैं, यहाँ भी जब आते हो। बाबा तुम बच्चों को समझाते हैं। ऐसे मत समझो, हमारे पास जो यहाँ रहते हैं सो कोई शिवबाबा की याद में रहते हैं। ना बच्चे। तुम्हारे में कोई अच्छे हैं जो याद में रहते हैं। यहाँ जो रहते हैं नम्बरवार, वो शायद कोई ज़रा भी याद नहीं कर सकते हैं। यहाँ बैठे होंगे तो भी घर–बार, धूरछाई, ये सब (...)। इसको धूरछाई कहेंगे ना। तो धूरछाई है उनके। तो ये तो माया के कारण धूरछाई मुँह में पड़ती है ना। ... धूरछाई पड़ते–3 काला मुँह हो जाते हैं; क्योंकि धूरछाई को याद करते हैं। जिससे हम गोरा बनते हैं उनको तो कोई जानते भी नहीं हैं। तो देखो, उसको कहा ही जाता है–माया का परछाया। तो छाया हुई ना बच्ची। धूरछाई हुई ना। उनमें भी तो लिखा हुआ है ना। तो इसलिए बाप बैठ करके समझाते हैं कि मूल बात तुम्हारी है ही (...)। हमारे पास बहुत अच्छे–2 बच्चे हैं, जो बहुत अच्छे वारिस बनाते हैं, फर्स्ट क्लास हैं बहुत; पर बाबा जानते हैं कि योग में रह नहीं सकते हैं। मूल बात है योग की। योग में रहने से देहअभिमान उनका बहुत कम हो रहेगा, बहुत मीठे हो जाएँगे। देहअभिमानी रहने से मीठे बनते ही नहीं हैं, बड़े कड़े बनते हैं; कोई से झगड़ा करने, कोई से हंगामा करने, कोई से बिगड़ने में देरी नहीं करते हैं। ब्राह्मणी भी ऐसी, बाबा थोड़े ही ऐसे कहते हैं ब्राह्मणी नहीं। वो भी लड़ पड़ती है बहुतों से। नम्बरवार, बाबा सबके लिए तो नहीं कहेंगे ना। 'बच्चे' बाप कहेंगे बच्चों के लिए, तो सबके लिए थोड़े ही कहेंगे। कोई तो सपूत होते रहते हैं ना। तो ये भी बेहद का बाप है। बाबा सपूत उसको कहते हैं जो याद (में) बहुत अच्छी तरह रहते हैं। तो उनका विकर्म विनाश होगा। तो उनसे कोई भी खराब बात उल्टी–सुल्टी नहीं रहेगी और जितना याद करेंगे इतना जो दुनिया है, सो भूलते जाएँगे। ये मित्र–संबंधी, इनको हम धूरछाई कहेंगे ना, सभी। इन सबको भूल जाना है। देहधारी जो भी चीज़ है उन सबको भूल जाना है। सूक्ष्मवतन वालों को भी भूल जाना है; क्योंकि हम(को) जाना ही है घर। हम नंगे आए थे, हमको नंगा है जाना। ये भी पक्का याद करो, हम(को) नंगा जाना है। अभी ये सभी शरीर सहित, ये सब जो कुछ भी हैं, इन आँखों से देखते हैं, ये कुछ भी (...)। ये ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है ना बच्चों को। ऐसे नहीं है कि कोई साक्षात्कार मिला हुआ है। तुमको तीसरा नेत्र ज्ञान का मिला है, जिसे तुम जानते हो। अपने घर को भी जानते हो और अपने राजधानी को भी जानते हो। समझा ना! जानते हो माना ही कि तुम देखते हो। जिस चीज़ को जानना होता है, बरोबर भई शिव को। अच्छा, शिव को... लिंग है ना शिव को। हम जानते हैं ना शिव को। ...शिव का चित्र तो देखते भी हैं ना। तो जिसको भी जानते हैं, बरोबर देखते हैं। तुम जानते हो शिवबाबा को। सिर्फ अभी तुमको ये ज्ञान मिला है, शिवबाबा कोई ऐसे काला लिंग नहीं है, शिवबाबा वो बिन्दु के मिसल ही है। अच्छा, ये भी जानते हो बरोबर कि अभी हम घर जाएँगे। ये भी तो जानते हो ना अच्छी तरह से। तो गोया हम घर को देखा हुआ है; क्योंकि हम वहाँ रह करके आए हैं। अहम् आत्माएँ घर में रह करके आते हैं। वहाँ हम सदैव अशरीरी रहते हैं। अभी फिर हमको अशरीरी जाना है ज़रूर। बाबा कहते हैं अशरीरी जाना है। इसलिए अपन को आत्मा समझो। इस अशरीरी जाने से, अपन को आत्मा समझ करके बाप को याद करने से (...), बाप को भी याद करना है; क्योंकि पतित–पावन को भी तो

याद करना है ना। सिर्फ अपनी आत्मा को तो याद नहीं करना है ना। अभी आत्मा को तो तुम जानते हो। आत्मा कैसी है, क्या है, वो तो बहुत समझाया कि आत्मा अविनाशी है, उनमें 84 जन्म का पार्ट नूँधा हुआ है, वो एक शरीर छोड़ करके दूसरा लेती आती है, छोड़ करके लेती आती है। ये इनका कभी अंत होता ही नहीं है। तुम कभी भी, ऐसे समझो कि कभी भी हम बहुत थोड़ा समय, जबकि अभी का समय जो जाते हो, जो थोड़ा मुक्तिधाम में जा करके फिर भी तुमको आना पड़ता है; क्योंकि तुम ऑलराण्उड पार्ट बजाते हो। तुम घर तो रहते भी नहीं हो इतना, सिर्फ पार्ट ही बजाते रहते हो। तो ये ... बच्चों को तो याद रहना चाहिए ना कि अपन 84 जन्म पूरा करके घर जाते हैं और बाबा को याद करने से हम सतोप्रधान बन जाएँगे। तो पुरुषार्थ करना पड़े ना बच्चे। यहाँ तो और तो कोई धंधा–धोरी है नहीं। यहाँ तो आए हो इसलिए और अभी संगमयुग पर हो। अभी कलहयुग में नहीं हो। ...वहाँ जब हो तभी जैसे कि सेमी संगमयुग (में) हो। यहाँ तो पूरे संगमयुग पर हैं। सेमी .....हाँ, बहुत गोल–2 माल वहाँ बहुत है। जभी सेन्टर में आएँगे तभी समझेंगे कि भई हम संगमयुग में हैं। हम जा रहे हैं अपने गाँव में। बाकी सभी कलहयुग के किनारे पर हैं। समझा ना! कलहयुग में हैं। कोई लंगर छोड़ा नहीं है। तुम तो बोट में बैठे हो, जा रहे हो। पीछे कभी–2 बोट से उतर जाते हो, घड़ी–घड़ी। ये करना है, वो करना है, ये करना है, वो करना है, फिर उसमें फँस मरते हो। ये भी एक शास्त्र बने हुए हैं, जिसमें ये आखानी है कि तुम स्टीमर पर बैठे हुए हो, तुम उस पार जा रहे हो। स्टीमर का खिवैया कौन है? शिवबाबा। कोई कृष्ण के लिए स्टीमर नहीं दिखलाते हैं। कृष्ण को कभी खिवैया भी नहीं कहते हैं। कृष्ण को बागवान भी नहीं कहते हैं। जबकि बागवान कहा जाता है, खिवैया कहा जाता है, दुख हर्ता, सुख कर्ता कहा जाता है, तभी शिवबाबा को याद किया जाता है, कोई भी कृष्ण को नहीं याद करते हैं। सिर्फ जब गीता सुनते हो तो श्रीकृष्ण भगवानुवाच लगा हुआ है; परन्तु है शिव भगवानुवाच। नहीं तो कभी भी कृष्ण को बागवान (...)। बागवान ..... पतित–पावन, बुद्धि ऊपर में जाएगी, कृष्ण के पास नहीं जाती है। ये तुम बच्चों को समझाया जाता है; क्योंकि वो समझ नहीं है। कभी शिव को याद करते हैं, कभी कृष्ण को याद करते हैं, कभी किसको याद करते हैं। अथाह बुद्धि भटकती है। तो बाबा कहते हैं बुद्धि को भटकने से (...)। तो भटक, पीछे कैसे छुड़ाएँगे? अपन को आत्मा समझो, देह का भान छोड़ो और बाप को याद करो, बस फिर कोई भटकना नहीं। तो जब ऐसी भटकना सिखलाएँगे अपन को, तो फिर स्वर्ग का मालिक बन जाएँगे। मेहनत है ना बच्ची। कोई स्वर्ग का मालिक बनना है, ये तो मेहनत करनी पड़ेगी ना। तो ये सब कोशिश करनी है। ये सब बातें भूल नहीं जाना चाहिए। नहीं, ये तो यहाँ बहुत अच्छा इनको लगते हैं, रिफ्रेश होकर जाते हैं। जा करके अपना अनुभव भी सुनाते हैं। बस अनुभव सुनाने के बाद ढिरक–3 ढिरकते जाते हैं। फिर वैसे ऐसे–के–ऐसे हो जाते हैं। ये तो बच्चे समझते हैं ना। देखते हैं, समझते हैं, यहाँ आते हैं, बहुत अच्छा होकर जाते हैं, बड़ी खुशी में होकर जाते हैं ये बातें सुन करके। फिर वहाँ जा करके स्त्री का मुर्दे का, बच्चों का मुर्दे का, धंधे का मुर्दे का, उनका, देखा एकदम लिम्पायमान हो जाते हैं। तो कच्चे आशिक ठहरे ना। माशूक के कच्चे आशिक। पक्के आशिक वही जो काम करते माशूक को याद करे, धंधाधोरी करते माशूक को याद करे। समझा ना! भले काम करते भी माशूक, तब ये ऊँचा पद पाएगा। नहीं तो थोड़े ही पा सकेंगे। फिर नतीजा क्या होगा, अभी न पाएँगे तो फिर कल्प–कल्पांतर नहीं पाएँगे, कभी डबल ताज बनेंगे ही नहीं। बरोबर यहाँ कहते तो हो ना कि हम डबल ताज बनेंगे। तो डबल ताज तो क्या, वो सिंगल ताज भी नहीं बन सकेंगे। प्रजा को कोई ताज थोड़े ही रखे रहते हैं। तो इसलिए बाबा समझाते हैं कि यहाँ जब आते हो तो टाइम वेस्ट नहीं गुमाओ। यहाँ कोशिश करके, यहाँ क्या रखा

हुआ है! अरे, यहाँ क्या, मंदिर हैं, फलाना है, टीरा है, दिलवाला मंदिर है, सो भी तुम्हारी यादगार है, वो देख सकते हो कि बरोबर नीचे तपस्या, ऊपर में स्वर्ग। सो तो तुम बैठे हो, देखो, ...नीचे बैठे हो ना, तुम बैठे हो ना नीचे और ऊपर में ल०ना० खड़ा है, स्वर्ग खड़ा है। हूबहू। अभी बाबा ने यहाँ आ करके ये चित्र तो नहीं बनाए हैं मंदिर को देख करके। नहीं, ये मंदिर को तो नहीं, ये तो पहले से ही हम लोग बनाते रहते हैं, बड़े पहले से ही ज्ञान है। ये तो जैसे कि कोई समझे, कोई नया होगा ना, वो बोलेगा– इन्होंने शायद इस चित्रों को देख करके ये बैठ करके यहाँ चित्र बनाए। ऐसे भी कोई समझेंगे; क्योंकि तुम उनको दिखलाते हो ना जा करके– देखो, ये वही है ना, राजयोग का आसन नीचे लगा हुआ है और ऊपर में राजाई खड़ी है। नीचे मम्मा भी है, बाबा भी है, जगदम्बा है, जगतपिता है और अधरकुमार हैं, अधरकुमारियाँ हैं, कुमारियाँ हैं। ये सभी मंदिर के ये रखा है थोड़ा–2 निशानियाँ। अभी तुम जानते हो, इनको तो कोई भी नहीं जानते हैं, जिन्होंने बनाया है, जैनी लोग और जो इनके ऊपर खर्चा कर रहे हैं करोड़ों रुपया, बड़ी साहुकारों की कमेटी है, धूर भी नहीं जानते हैं। बाबा इनको कह भी दिया था– अहमदाबाद में जा करके (...), इसके ऊपर भी किताब अभी छपे हुए हैं, वहाँ जा करके ये जो भी जैनी होवे, अच्छा, उनको बैठ करके ये किताब भी देना, उनको समझाना कि ये तो ज्ञान अभी फिर से मिल रहा है। शिवबाबा इन आदिदेव द्वारा हमको राजयोग सिखलाय स्वर्ग का मालिक बना रहे हैं फिर से और फिर लड़ाई भी लगती है जिससे फिर स्वर्ग की (...)। सतयुग आ जाएगा, अभी कलहयुग का.....। मैं नहीं समझता हूँ, कभी कोई ने मुझे लिखा है अहमदाबाद से कि बाबा, हम जो मंदिर बनाने वाली कमेटी है, उनको भी निमंत्रण दिया या उनको भी बुलाया है। वो भी आए हैं या उसके (...) हम गए हैं तो आकर समझो। तो जिसके तुम जो बने हो कमेटी, शिव मंदिर की, उनको समझो तो सही, किसके कमेटी के बने हो। ये कौन हैं वहाँ बैठे हुए, दिलवाला कौन है, आदिदेव कौन है, आदिनाथ कौन है, अचलघर क्या है। तो ये तो सब बच्चे तो जानते हैं ना; परन्तु कोई को भी याद नहीं है। अभी देखो आज याद दिलाता हूँ ना। तो वो सुनेंगे और उनकी बुद्धि में आएँगे, स्मृति आएगी। घड़ी–2 हर एक बात की स्मृति मिलती रहती है ना। तो अभी वहाँ जाएँगे, कोशिश करेंगे, उनका पता निकालेगा, और तो इतना नहीं मिल जाते हैं। वहाँ भी तो जैनी मंदिर है तो सही ना। इनकी शाखाएँ वहाँ हैं, पर ये है पुराना बड़ा मंदिर बना हुआ। जैनी मंदिर सब जगह छोटे होते हैं ना। जैनियों के भी ये भी छोटे–2 मंदिर हैं, ये बड़े मंदिर हैं। जैसे शिव का मंदिर बड़ा है काशी में या सोमनाथ में। बाकी मंदिर तो सब गली–2 में हैं तो सही ना। तो ये भी ऐसे ही है, मंदिर सबका होता ही है; परन्तु उनको कोई भी (...), बिचारे सब मंदिर में जाते हैं, किसके पास जाते हैं और देखो कोई मालूम किसको होता ही है। ये शिवबाबा बैठ करके समझाते हैं ना। तो इनके लिए भी तो समझाते हैं ना। ये भी बहुत ही भटका हुआ है, चारों धाम भटका है, सभी चित्रों को देखा है, ये किया है, ये किया है, डब्बे में ठीकरी एकदम। अभी तो तुम हर चित्र के आयु को जानते हो, हर चीज़ को जानते हो। बाबा ने समझाया है, जो कुछ होता है, सो इस समय में जो होता है उसकी चर्चा भक्तिमार्ग में चलती है। इसकी चर्चा, ये जो बाप स्थापन करते हैं, ये जो त्योहार हैं– रखड़ी बंधन, शिव जयन्ती, ये कृष्ण जयन्ती, ये गीता जयन्ती, फलाना–2 जो कुछ भी हैं, व्रतनेम जो भी होते हैं (...)। व्रत भी ये है। सच्चा–2 व्रत ये है मन्मनाभव का। वो व्रत नहीं है कि निर्जल रखना और सात–2 रोज़ खाना नहीं। वो होती है ना कालकत्ते में 7 रोज़ जल पर ..... करते हैं। (किसी ने कहा– तुलसी की) हाँ, तुलसियों की, बहुत ही कुछ करते हैं, 7 रोज़ भूख मरते हैं। पिछाड़ी में श्मशान में जाते हैं। ठीक है! अच्छा। तुम भी तो देखो यहाँ योग में रहते हो ना। पिछाड़ी में श्मशान में जलना तो सबको है ना। तो ये

सभी बातें बहुत करके बच्चों को समझाते हैं कि दुनिया में तो बिल्कुल ही अंधियारा, घोर अंधियारा लगा। ये जो कुछ देखते हो भभका, ये बच्ची इसको कहा जाता है माया की, रावण की पाम्प पिछाड़ी में; क्योंकि इस समय में है गुप्त बाबा। तो माया पाम्प बहुत रचती है, हैरान करती है। समझा ना! देख करके, स्वर्ग तो यही हो गया ना और दूसरा कौन–सा स्वर्ग? तो इसको कहा जाता है–माया की पाम्प, बहुत एकदम। इतना माया की पाम्प कभी होती नहीं है। ये अभी हुई है। देखो, आगे था क्या! अमेरिका में एरोप्लैन था, बिजली था, फलाना था? वो पहले थोड़े ही था। जब निकले हैं तब पीछे आई है यहाँ। जहाँ निकली है, झट बाहर में आती है। नहीं तो अमेरिका में भी कोई ये बिजली या मोटर या फलाने थे थोड़े ही या विलायत में थे थोड़े ही। ये तो पीछे निकले हैं ना बच्चे! बिजली भी पीछे निकली है। गैस की बत्ती भी पीछे अभी निकली है। इसको 100/150 बरस हुआ है। नहीं तो ये सब थोड़े ही थे। बिजली थोड़े ही थी। नहीं, वहाँ भी चर्चों में, वगैरहों में शमा जलाते थे। सब जगह में शमा जलती थी या दीवे जलते थे। देखो जैसे ये गैस नहीं थी। तो ये है माया का पाम्प। सो माया के पॉम्प में ये फँस मरते हैं एकदम। समझा ना! वो बोलते हैं– वाह! स्वर्ग तो यहाँ ही है। इनसे स्वर्ग क्या, विमान है, बिजली है, फलाना है, अभी बाकी है। तो इसको कहा जाता है तो फॉल ऑफ माया के पाम्पिया।...बायोस्कोप भी है। समझा ना! वो भी बाबा का देखा हुआ है, इसका कि फॉल ऑफ पाम्पिया। उसमें दिखलाते हैं कि कितने ये सभी हैं और ये खतम हो जाती है टूट–फूट करके। उसमें दिखलाते हैं विनाश कैसे होता है। तो..फॉल ऑफ पाम्पिया, ये भी तो तुमको समझाया जाता है कि इस समय में माया का बहुत ही प्रचार है। तो मनुष्य बाप के तरफ में न जाए। बोले– वाह! बाप को याद करने से क्या होगा, स्वर्ग मिलेगा, स्वर्ग तो यहीं है ना। तुम जानती हो कि बरोबर, किसको भी कहती हो– अरे पर स्वर्ग? बोला– स्वर्ग–नर्क तो यहाँ हैं ना। जो मनुष्य दुःखी हैं, पाप करते हैं वा दान–पुण्य नहीं करते हैं और उनको पैसे नहीं मिलते हैं, दुखी होते हैं और हम जो दान–पुण्य करके आए हुए हैं, हमारे लिए स्वर्ग है यहाँ, विमान हैं हमको, हमको बड़े–2 महल हैं, जिसमें हम रहते हैं। चलो तो सही, हमारे घर तो चलकर देखो। कैसे खिलौने, कैसे सजाए हैं फर्स्टक्लास। तुम देखा ना, अभी गवर्मेण्ट हाउस को कैसे सजाया है। ये जो आए हैं विज़ीटर्स। कितना उनको दिखलाने में। अरे ये क्या है! कुछ भी नहीं है एकदम। कहाँ स्वर्ग, कहाँ ये नर्क। स्वर्ग की एक चीज़ भी यहाँ नहीं हो सकती है। अरे, वहाँ की बत्ती वगैरह तो ऐसे होगा जो कभी कोई ने देखा भी नहीं होगा एकदम। वहाँ की चीज़ कभी कोई यहाँ देख सकते हैं क्या? वहाँ की दिखलाते हैं, गइयाँ ही वहाँ की ऐसे, हर एक चीज़ सतोप्रधान, फर्स्टक्लास एकदम। ...इसलिए तो गइयाँ दिखलाते हैं कृष्ण की, कृष्ण के पास। गइयाँ कोई चराते थोड़े ही थे। नहीं–2, ये तो इनके घर में गइयाँ जो होती हैं वहाँ सतयुग में, वो गइयाँ दिखलाते हैं। वो जो श्रीनाथ द्वार है ना, वहाँ चित्र बनते हैं, उनमें गइयाँ बनाते हैं। ऐसी फर्स्टक्लास बैठकर बनाते हैं। हम लोग जब जाकर खरीद करते थे, दुकानों के लिए, बेचने के लिए, तो मैग्नीफायिंग ग्लास ले जाते थे। ऐसी फाइन गऊ, ऐसी सुहेनी शोभायमान गऊ, एकदम फर्स्टक्लास। वो कारीगरी होती थी। बोलता है–ये ऐसी गऊ होती है सतयुग में। ऐसी नहीं दुबली, हड्डी निकली पड़ी है, कन कुतरिया पड़े हैं, सींग टूटे पड़े हैं, फलाने हैं। नहीं, वहाँ सब कुछ एकदम फर्स्ट क्लास। तुम भी फर्स्टक्लास, तो तुम्हारा जो भी फर्नीचर वा जो भी देखने में आते हैं, खान–पान, वहाँ का फल–फूल, फर्स्टक्लास एकदम, नम्बरवन। देखो ... जाते हैं जब सूक्ष्मवतन में। शिवबाबा, बाबा, वहाँ तो संतरे इतने–2 बड़े लटकते हैं झाड़ में और पीओ तो बस बात ही मत, उसका नाम ही रख देते हैं सूबीरस, हाँ अमृत रस संतरों में भरी हुई। सो तो बुद्धि समझती है बरोबर कि स्वर्ग जिसका नाम है, वैकुण्ठ, पैराडाइज़, किसको भी कोई

पता नहीं है। अरे, सब लोग उसको पैराडाइज़ कहते भी हैं। कहते हैं क्राइस्ट से 3000 बरस पहले, आने के पहले यहाँ पैराडाइज़ था। अबे, कहाँ था पैराडाइज़? डब्बे में ठीकरी। ये तो भारत पैराडाइज़ था। अरे, भारत भूले हुए हैं एकदम। जंगली लोग। कांटे बन गए हैं ना बच्चे। तो बाप आ करके समझाते हैं बच्चों को कि बच्चे, अभी तो तुम बच्चे अपने बाप को याद करो, जिससे स्वर्ग लेते हैं। अब ये धूरछाई जो है, अभी माया की धूरछाई मुँह में पड़ी हुई है, अभी इसको भूलो। तो तुम बाप को याद करो तो फिर गोरे बन जाएँगे एकदम। फिर धूरछाई वहाँ नहीं होती है। अरे, वहाँ तो ये हवा लगती है, थोड़ी भी कभी मिट्टी उड़ती है ना, पता नहीं वहाँ कोई मिट्टी–विट्टी उड़े कुछ। मिट्टी से भी तो आँख में पड़े, दुःख होवे ना। बिल्कुल नहीं। ये समझते नहीं कि हम कहाँ के लिए, बाप कहाँ के लिए पढ़ा रहे हैं। भला..यहाँ पढ़ करके मिट्टी में गुजर करते हैं। ये सब भूल जाते हैं इनको। नहीं तो इनको समझना चाहिए बच्चों को, यहाँ भी बैठे हुए हैं, अभी शिवबाबा से हम पढ़ रहे हैं। फिर हम स्वर्ग का, श्री लक्ष्मी–नारायण, सूर्यवंशी घराने का अभी मालिक बनेगा ये 21 जन्म। ये अपने से बैठ करके सब वार्ता करनी चाहिए और समझाने के लिए यहाँ आ करके, हर एक चित्र को अच्छी तरह से समझ करके, जान करके– ये फलाना है, ये फलाना है, ये ऐसी है। फिर हम चित्र ले करके समझाएँगे। बाबा प्रबंध कर रहे हैं। मुख्य चित्रों का वो एक किताब अभी बनाएँगे। जैसे किताब था ना– चार तौलिका। ऐसे ही मुख्य चित्रों का फिर इतना लम्बा भी बनाएँगे। अभी मैगज़ीन भी मुख्य चित्रों की निकल रही है। मैंने बोला है कि थोड़ी बड़ी ... बनाओ ऐसे। जैसे टाइम्स की, इंडिया की है। उसमें जो मुख्य चित्र हैं, देखो मैं डायरैक्शन देता भी रहता हूँ, तुम बच्चों को भी समझाता रहता हूँ। जो मैगज़ीन बनाओ, वो बड़ी बनाओ। उसमें जो मुख्य चित्र हैं, जैसे सीढ़ी का है, तो फ्रण्ट पेज में लम्बे दो पेज में चला जाए। समझा ना। अच्छा! कोई भी दूसरा चित्र हो पिछाड़ी में, तो दोनों पेज में चला जाए; परन्तु दूसरे चित्र की इतनी लम्बी कहानी नहीं है, जितनी सीढ़ी की निकली हुई है; (क्यों)कि सीढ़ी में तुमको 84 जन्म दिखलाना होता है। सो बाबा डायरैक्शन दे रहे हैं। वो टाइम तो लगेगा ना। रंगीन चित्र बनने में खर्चा लगेगा, टाइम लगेगा। अच्छा बिल्कुल फर्स्टक्लास चित्र जब बने, तब उनकी कॉपी निकले, तब उनका फोटो निकले, तब ही उनका ब्लॉक्स बने, तो टाइम तो लगता है ना बच्ची; परन्तु बाबा बता देते हैं कि बाबा कैसे डायरैक्शन देते हैं तो तुम्हारे सर्विस करने के लिए ऐसे सहज हो, जो कहाँ भी पॉकेट हो, जा करके तुम किसको भी समझाओ; परन्तु समझाएगा वही जिनको प्रैक्टिस होगी समझाएगी(समझाने की)। जो अपने धंधेधोरी में यहाँ–वहाँ पड़ा रहेगा, बाप को याद भी नहीं करता होगा (...)। नहीं तो चित्र तो अभी भी हैं। मैगज़ीन भी है तुम्हारे पास। .....जो मैगज़ीन चित्र वाली बनी थी, सो भी तो डायरैक्शन से बनाई ना कि भई इसमें चित्र लगा दो तो ये घड़ी–2 पढ़ेंगे। तो उनमें शायद सीढ़ी नहीं है। उस समय में सीढ़ी नहीं बनी थी। नहीं, है, है। (किसी ने कहा–सीढ़ी है) सीढ़ी भी है। तो वो सीढ़ी को भी पढ़ना चाहिए ना; क्योंकि यहाँ तो समझ है ना। जैसे रोज़ गीता का पाठ करते हैं ना। जो भी पाठी होते हैं, जो रोज़ गीता के पाठ बिगर कभी बाहर नहीं जाएगा धंधे पर। तो बाबा भी तो कहते हैं ना। बाबा जब जाते थे, ट्रेन में होगा, किसमें भी ..., गीता का पाठ ज़रूर करेंगे। अभी तो तुमको गीता चित्रों सहित मिली है। सो भी एक्युरेट ये चित्र सच्चे–सच्चे। उनमें बैठ करके समझना चाहिए। तो बाबा याद भी पड़े, कोई को समझा भी सको। मेहनत करने बिगर थोड़े ही कुछ तुम पद पा सकेंगे। पीछे पिछाड़ी में हाय–2 करेंगे, हम पढ़े नहीं अच्छी तरह से। साक्षात्कार हो जाएगा, हम फलानी प्रजा बनेंगे, फलाना करेंगे, ऐसा बनेंगे, ऐसे बनेंगे। पिछाड़ी में तो सबको साक्षात्कार होना ही है। नहीं होगा बच्चे! जब इम्तहान पूरा होते हैं तब मालूम होता है ना, नम्बरवार बैठ जाते हैं। यहाँ नम्बरवार बैठ

जाते हैं। ब्राह्मण तुम नम्बरवार बैठेंगे। बरोबर तुमको सब साक्षात्कार होगा। ये तो लॉ है ना बच्चे। एक दर्जे से जब दूसरा दर्जे में जाते हैं, तो यहाँ बैन्च में, इम्तहान पूरा होता है, यहाँ बैठ जाते हैं। पीछे ट्रान्सफर होते हैं। तो यहाँ तुम्हारा इम्तहान पास हो जाएँगे, यहाँ तुम सब जान जाएँगे। तुम जानेंगे नम्बरवार। रुद्रमाला में जाएँगे, नम्बरवार फिर विजयमाला में आएँगे। और उस समय में तुम्हारा क्या हाल होगा! तुम देखते हो कि स्कूल में पास होते हैं, तो कितने बिचारे नापास होते हैं। कितना शिष्य तो रोते हैं। वो माँ–बाप भी नाराज़ हो जाते हैं। अभी तुम्हारे कोई माँ–बाप तो नहीं हैं। ये तो तुम खुद आत्माएँ हो। आत्मा है, बिचारी नाराज़ हो जाएगी। बोलेगी– अब मैं पीछे हो गया। पीछे तो कोई इम्तहान तो नहीं मिलेगा ना। वो कल्प–कल्पांतर का हिसाब हो जाएगा। ...टोली ले आओ। ....अरे भई आओ, बंधनमुक्त हो। अभी अकेले चलो। एकदम मानते ही नहीं हैं। चलो बच्ची, है कोई मीठी–2 बच्ची? ....तुम ब्राह्मणों को ये। दुनिया में कोई नहीं जानते हैं बाप का रास्ता। सिर्फ ये चित्र। चित्र बिगर भी मुश्किल है। ये है बाबा, ये है डाडा, ये शिवबाबा, ये सभी आत्माओं का बाबा, ये प्रजापिता ब्रह्मा। भई वर्सा इनसे मिलता है। अभी जो बैठकर समझाएँगे, वो अनुभवी हैं तभी तो बताते हैं। इनसे और ये वर्सा मिलेगा। ये इसको राजयोग कहा जाता है। ये शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा राजयोग सिखलाय, ये राजाई मिलती है, बस। विनाश सामने खड़ा है शंकर द्वारा। ये है तुम्हारा पैगाम देना। क्या समझा, अभी बाबा मुस्कान देते, समझें न समझें। जो भी होगा अपने इसका प्रजा में आने वाला..., वो कुछ–न–कुछ बिचारे समझेंगे कि ये तो ठीक बताते हैं, फँसाते तो कुछ भी नहीं हैं। बोलता है ये है तुम्हारा सबका बाबा। हम सब भाई–2 हैं। ये फिर ब्रह्मा द्वारा फिर आ करके पढ़ाते हैं, ब्राह्मण बनाते हैं। पीछे ये हमको पढ़ा करके, देवता बनाते, विष्णुपुरी का मालिक बनाते हैं। अभी तुमको आ करके समझना है, जो स्वयं भी पढ़ी हैं सब बहुत। पिछाड़ी में समझाएँ, अभी जहाँ चाहिए तहाँ जा करके समझो। इन बिचारियों को तो सिर्फ इतना ही समझाया जाता है– अरे भई, तुम अपन को आत्मा समझो और उसको परमात्मा। बाप को कहा जाता है शिवबाबा। शिवबाबा तुमको कहते हैं मुझे याद करेंगी। जितना याद करेंगी तुम्हारा पाप कट जाएगा। तुम जो तमोप्रधान बन गए हो, सतोप्रधान (...)। अभी कोई तकलीफ बा(बा) जास्ती देते हैं क्या? किसको ये बोलो, ये अक्षर तो बोल सकती हो ना। घड़ी–2 ठोंकों, पक्का हो जावे। ये चित्र ये हैं, मूल चित्र बच्चे ये हैं। त्रिमूर्ति देखो भला चित्र तो सभी हैं बहुत ढेर–के–ढेर। वो राई वर्मा के अनेक चित्र हैं। कई तुम जानते हो कि सब चित्रों में अच्छे में अच्छा है त्रिमूर्ति। वो हैं सूक्ष्मवतन के देवताएँ। बाकी तो जो भी चित्र हैं, सो सभी स्थूलवतन के। बस। देवता हैं ब्रह्मा–विष्णु–शंकर, बाकी हैं स्थूलवतन। तो ऊँचे–ते–ऊँचा वो हुआ। अच्छा, उनसे ऊँच है शिवबाबा। ये भी तो सब समझ सकते हैं ना। भले नहीं समझते हैं, कुछ पता नहीं है। तो तुम रखते ही हो ऊँचे तो उनका चित्र। ये नीचे का चित्र हम कोई रखते ही नहीं। यही इकट्ठा चित्र– वो बाबा, वो ब्रह्मा प्रजापिता बिल्कुल मशहूर है और उन्हों द्वारा (...)। तन चाहिए उनको। उसमें प्रवेश करके पढ़ाते हैं, ये विष्णु बनाते हैं। ये पूरी स्थापना हो रही है। विनाश सामने खड़ा है। शंकर द्वारा ये महाभारी महाभारत की लड़ाई है और याद करने से तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाएँगे और विष्णुपुरी में चले जाएँगे। सारा मदार इसके ऊपर है। जास्ती भी उनको समझाने का है– वर्सा लेना है तो जा करके लो।

अच्छा! मीठे–2 सिकीलधे बच्चों प्रति मात–पिता, बापदादा का यादप्यार और गुडमॉर्निंग।